चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	10.2.24	2	2-6

1984 में हिसार आए थे स्व. डा. एमएस स्वामीनाथन

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के नाम पर ही रखा गया है हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का नाम

जागरण संवाददाता, हिसार : देश की हरित क्रांति के जनक रहे डा. एमएस स्वामीनाथन 1984 में हिसार आए थे। उन्होंने चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान की जानकारी ली थी। उनका वह विशेष दौरा था। सरकार की तरफ से उनको दिए गए भारत रत्न ने पुरानी यादों को भी ताजा कर दिया।

साथ ही भारत रत्न प्राप्त करने वाले भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के नाम पर ही हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का नाम रखा गया है। दोनों माननीय ने देश की कृषि के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में योगदान रहा है। हकृवि को 1970 में बनाए जाने के बाद उनका नाम भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के नाम पर रख दिया गया। इसमें कृषि से जुड़ी शोध पर कार्य किया जाता है। उस समय हरित क्रांति के जनक डा. एमएस स्वामीनाथन को जब इसका पता चला तो वह विशेष दौरा करने के लिए हिसार की धरती पर पहुंचे। उन्होंने विश्वविद्यालय का दौरा किया और वहां पर चल रहे अनुसंधानों का अवलोकन कर शोध कार्यों की जानकारी हासिल की।

महान कृषि वैज्ञानिक डा. एमएस स्वामीनाथन हकृवि के तत्कालीन कुलपति एलडी कटारियां के साथ अनुसंधान फार्म पर फसलों का अवलोकन करते हुए।

चौधरी चरण सिंह एवं डा. एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात : प्रो. काम्बोज

कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्व. डा. एमएस स्वामीनाथन को अहम योगदान था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने उनको भारत रत्न मिलने पर खुशी व्यक्त की। कुलपति ने कहा कि स्व. चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने कहा हमें गर्व है कि इस विश्वविद्यालय का नाम इस महान नेता के साथ जुड़ा हुआ है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	10.2.24	11	5-8

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह एवं भारत में हरित क्रांति के जनक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 9 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा) : कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार मिलने पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। भारत सरकार द्वारा इन दोनों महान विभूतियों को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार प्रदान करने से कृषि जगत से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षाविदें, कृषक समुदाय सहित विद्यार्थियों में खुशी की लहर है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने देश में किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियां बनाई। उन्होंने कहा हमें गर्व है कि इस विश्वविद्यालय का नाम इस महान नेता के साथ जुड़ा हुआ है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश व देश के प्रत्येक किसान को इस विश्वविद्यालय में विकसित कृषि तकनीकों का लाभ पहुंचे। उन्होंने विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे किसानों की समृद्धि व कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की भारत में हरित क्रांति का सूत्रपात करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें फादर ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया की संज्ञा प्रदान की गई। कुलपति ने कहा कि डॉ. स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के हरित क्रांति में योगदान से भी बहुत प्रभावित रहे। उन्होंने वर्ष 1984 में इस विश्वविद्यालय का विशेष रूप से दौरा किया और यहां चल रहे अनुसंधानों का अवलोकन कर शोध कार्यों की प्रशंसा की। कुलपति ने इस महान वैज्ञानिक के अतुल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि 1960 में जब भारत अन्न की कमी से जूझ रहा था तब उस समय इस महान वैज्ञानिक ने गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली प्रजाति तैयार की थी। भारत सरकार की ओर से उन्हें विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सन् 1967 में पदम्श्री, 1972 में पदम् भूषण और 1989 में पदम् विभूषण से सम्मानित किया गया था।

भारत में हरित क्रांति के जनक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	10.2.24	4	4

चौ. चरण सिंह व डॉ. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात :- प्रो. काम्बोज

हिसार, 9 फरवरी (ब्यूरो): कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार मिलने पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

» डा.स्वामीनाथन ने 1984 में किया था हकृवि का दौरा

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है, इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। कुलपत्ति ने कहा कि डॉ. स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के हरित क्रांति में योगदान से भी बहुत प्रभावित रहे। उन्होंने वर्ष 1984 में इस विश्वविद्यालय का विशेष रूप से दौरा किया और यहां चल रहे अनुसंधानों का अवलोकन कर शोध कार्यों की प्रशंसा की। कुलपति ने इस महान वैज्ञानिक के अतुल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि 1960 में जब भारत अन्न की कमी से जूझ रहा था तब उस समय इस महान वैज्ञानिक ने गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली प्रजाति तैयार की थी। भारत सरकार की ओर से उन्हें विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सन् 1967 में पदम्श्री, 1972 में पदम् भूषण और 1989 में पदम् विभूषण से सम्मानित किया गया था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	10.2.24	2	5

'चौ. चरण सिंह व डॉ. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना सौभाग्य'

भास्कर न्यूज | हिसार

भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एमएस. स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार मिलने पर एचएयू कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। भारत सरकार द्वारा इन दोनों महान विभूतियों को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार प्रदान करने से कृषि जगत से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, कृषक समुदाय सहित विद्यार्थियों में खुशी की लहर है।

कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10.2.24	1	4-5

चौधरी चरण सिंह और डॉ. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने चौधरी चरण सिंह और हरित क्रांति के जनक डॉ. एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न देने पर हर्ष व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे पूर्व उपप्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक डॉ. एमएस स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात है।

उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. एमएस स्वामीनाथन की भारत में हरित क्रांति का सूत्रपात करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें फादर ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया की संज्ञा प्रदान की गई। डॉ. स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह एचएयू के हरित क्रांति में योगदान से भी बहुत प्रभावित रहे। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	09.02.2024	--	--

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह एवं भारत में हरित क्रांति के जनक डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात - प्रो. बी.आर. काम्बोज

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार मिलने पर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बधाई देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। भारत सरकार द्वारा इन दोनों महान विभूतियों को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार प्रदान करने से कृषि जगत से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षाविदें, कृषक समुदाय सहित विद्यार्थियों में खुशी की लहर है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने देश में किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियां बनाई। उन्होंने कहा हमें गर्व है कि इस विश्वविद्यालय का नाम इस महान नेता के साथ जुड़ा हुआ है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश व देश के प्रत्येक किसान को इस विश्वविद्यालय में विकसित कृषि तकनीकों का लाभ पहुंचे। उन्होंने विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे किसानों की समृद्धि व कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने देश में किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियां बनाई। उन्होंने कहा हमें गर्व है कि इस विश्वविद्यालय का नाम इस महान नेता के साथ जुड़ा हुआ है।

उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन की भारत में हरित क्रांति का सूत्रपात करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें फादर ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया की संज्ञा प्रदान की गई। कुलपति ने कहा कि डॉ. स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के हरित क्रांति में योगदान से भी बहुत प्रभावित रहे। उन्होंने वर्ष 1984 में इस विश्वविद्यालय का विशेष रूप से दौरा किया और यहां चल रहे अनुसंधानों का अवलोकन कर शोध कार्यों की प्रशंसा की। कुलपति ने इस महान वैज्ञानिक के अतुल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि 1960 में जब भारत अन्न की कमी से जूझ रहा था तब उस समय इस महान वैज्ञानिक ने गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली प्रजाति तैयार की थी। भारत सरकार की ओर से उन्हें विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सन् 1967 में पद्मश्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	09.02.2024	--	--

Hari Kiran News
2 d ·

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह एवं डॉ. एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न मिलना कृषि जगत के लिए सौभाग्य की बात : प्रो. बीआर कम्बोज

हिसार। कृषि जगत में किसानों के उत्थान के लिए संघर्ष करने व इनकी समृद्धि और कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह एवं हरित क्रांति के जनक स्वर्गीय डॉ. एमएस स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार मिलने पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने खुशी जताई है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा इन दोनों महान विभूतियों को सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न पुरस्कार प्रदान करने से कृषि जगत से जुड़े वैज्ञानिकों, शिक्षाविदें, कृषक समुदाय सहित विद्यार्थियों में खुशी की लहर है।

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने शुक्रवार को कहा कि स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह किसान व कमेरा वर्ग के सच्चे हितैषी थे। स्वयं एक किसान व ग्रामीण परिवेश से होने के चलते वे किसानों की समस्याओं को अच्छी तरह से समझते थे। वे मानते थे कि देश के विकास का रास्ता खेत-खलिहानों से होकर गुजरता है इसलिए उन्होंने ताउम्र किसानों और गरीबों के उत्थान के लिए संघर्ष किया। उन्होंने देश में किसानों के जीवन और स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए कई नीतियां बनाई। उन्होंने कहा हमें गर्व है कि इस विश्वविद्यालय का नाम इस महान नेता के साथ जुड़ा हुआ है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश व देश के प्रत्येक किसान को इस विश्वविद्यालय में विकसित कृषि तकनीकों का लाभ पहुंचे। उन्होंने विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे किसानों की समृद्धि व कल्याण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें।

कुलपति कहा कि स्वर्गीय डॉ. एमएस स्वामीनाथन की भारत में हरित क्रांति का सूत्रपात करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिनके अभूतपूर्व योगदान के लिए उन्हें फादर ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन इन इंडिया की संज्ञा प्रदान की गई। कुलपति ने कहा कि डॉ. स्वामीनाथन, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के हरित क्रांति में योगदान से भी बहुत प्रभावित रहे। उन्होंने वर्ष 1984 में इस विश्वविद्यालय का विशेष रूप से दौरा किया और यहां चल रहे अनुसंधानों का अवलोकन कर शोध कार्यों की प्रशंसा की। कुलपति ने इस महान वैज्ञानिक के अतुल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि 1960 में जब भारत अन्न की कमी से जूझ रहा था तब उस समय इस महान वैज्ञानिक ने गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली प्रजाति तैयार की थी। भारत सरकार की ओर से उन्हें विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सन् 1967 में पदमश्री, 1972 में पदम् भूषण और 1989 में पदम् विभूषण से सम्मानित किया गया था।

@followers Highlight Department of Agricultural Meteorology,HAU,HISAR Botanical Garden Hau Hisar #hau #hauhisar #haryana #hisar #Bharat Ratna

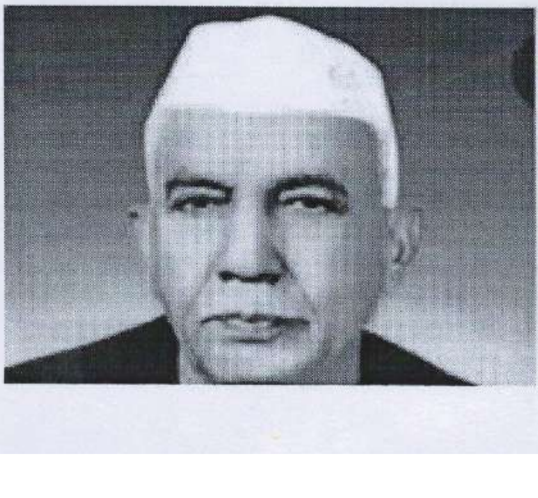

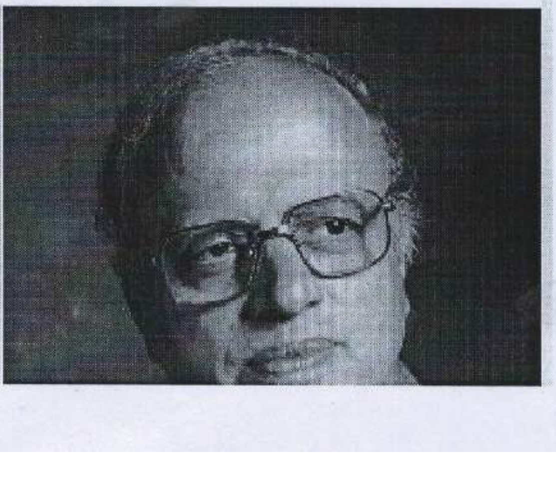

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	10.2.24	8	4-8

नूंह जिले में खुलेगा कृषि विज्ञान केन्द्र : संजीव कौशल

चंडीगढ़, 9 फरवरी (राम सिंह बराड़): हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के तिलहन वैज्ञानिकों ने हाल ही में सरसों की दो नई किस्में आरएच-1424 और आरएच-1706 विकसित की हैं। इसके अतिरिक्त, गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 भी विकसित की गई है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरकों में अधिक उपज देती है। मुख्य सचिव आज यहां विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक में भाग ले रहे थे। उन्होंने बताया कि ये किस्में उच्च उपज देने वाली और तेल सामग्री से भरपूर होंगी। ये किस्में देश के सरसों उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होंगी। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुआई के लिए सरसों की एक और उन्नत किस्म आरएच-1975 भी विकसित की है। संजीव कौशल ने बताया कि विश्वविद्यालय ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 विकसित की है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरक में अधिक उपज देती है। इस किस्म की पहचान भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों के लिए की गई है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू और कश्मीर शामिल हैं। इस किस्म की औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और अधिकतम उपज मात्र दो सिंचाई में 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है। इस 1402 किस्म को राष्ट्रीय स्तर पर रेतीले, कम उपजाऊ तथा कम सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय ने पिछले 3 वर्षों में 44 किस्मों का विकास और पहचान की है। संजीव कौशल ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक मिलेट्स एवं जैव अपघटन पर बेहतर कार्य करें। साथ ही, अर्बन फार्मिंग तथा इन्क्यूबेशन सेंटर पर भी अध्ययन करें ताकि किसानों को इनका अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि मिलेट्स नागरिकों के लिए बहुत ही फायदेमंद है। इसमें आयरन, प्रोटीन एवं फाइबर अधिक मात्रा में होता है। इसलिए मिलेट्स न्यूट्रीशन क्वालिटी डिलिसियस होनी चाहिए।

हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल चंडीगढ़ में चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए। साथ हैं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज।

उन्होंने कहा कि नूंह जिले के गांव छपेड़ा गांव में कृषि विश्वविद्यालय का एक नया कृषि विज्ञान केंद्र खोला जाएगा। इस केन्द्र के खुलने से इस क्षेत्र के विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञों से मार्गदर्शन मिल सकेगा। विश्वविद्यालय के वीसी बीआर कम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के बाजरा अनुभाग को बाजरा फसल में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए वर्ष 2022-23 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र से भी सम्मानित किया गया है। इसके अलावा सरसों अनुसंधान और विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय के बाजरा अनुभाग को लगातार दूसरी बार इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

कम्बोज ने कहा कि कॉलेज ऑफ बायो-टेक्नोलॉजी में माइक्रो प्रोपेगेशन और डबल हैप्लोइड उत्पादन के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर के प्रयोगशाला केंद्र में लगभग 20 लाख उच्च गुणवत्ता वाले, रोग मुक्त और आनुवंशिक रूप से समान पौधों का निर्माण किया जा सकेगा। इसके अलावा मधुमक्खी पालन के साथ कृषि और गैर-कृषि परिवारों के लिए आय और रोजगार सृजन के लिए मधुमक्खी पालन उद्योग के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन से सहयोग लिया गया है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय की मधुक्रांति योजना का उद्देश्य वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन और विविधीकरण को अपनाकर स्थायी आर्थिक और पोषण सुरक्षा प्राप्त करना है। बैठक में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधीर राजपाल के अलावा बोर्ड के सदस्य भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	10.2.24	4	5-7

नूंह जिले में खुलेगा कृषि विज्ञान केंद्र : संजीव

- मुख्य सचिव ने ली एचएयू के प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक
- एचएयू ने विकसित की गेहूं व सरसों की नई किस्में

जागरण संवाददाता, हिसार : हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने बताया कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के तिलहन विज्ञानिकों ने हाल ही में सरसों की दो नई किस्में आरएच-1424 और आरएच-1706 विकसित की हैं। इसके अतिरिक्त, गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 भी विकसित की गई है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरकों में अधिक उपज देती है। नूंह जिले के गांव छपेड़ा गांव में कृषि विश्वविद्यालय का एक नया कृषि विज्ञान केंद्र खोला जाएगा। इस केन्द्र के खुलने से इस क्षेत्र के विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञों से मार्गदर्शन मिल सकेगा। मुख्य सचिव विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक में भाग ले रहे थे। उन्होंने बताया कि ये किस्में उच्च उपज देने वाली और तेल सामग्री से भरपूर होंगी। ये किस्में देश के सरसों उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होंगी। इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुआई के लिए सरसों की एक और उन्नत किस्म आरएच-1975 भी विकसित की है। संजीव कौशल ने बताया कि विश्वविद्यालय ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 विकसित की है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरक में अधिक उपज देती है।

मिलेट्स पर बेहतर कार्य करें

संजीव कौशल ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानिक मिलेट्स एवं जैव अपघटन पर बेहतर कार्य करें। साथ ही अर्बन फार्मिंग तथा इन्क्यूबेशन सेंटर पर भी अध्ययन करें ताकि किसानों को इनका अधिक लाभ मिल सके।

बाजरा में उत्कृष्ट कार्य के लिए हो चुके हैं सम्मानित

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो . बीआर कम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के बाजरा अनुभाग को बाजरा फसल में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए वर्ष 2022-23 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र से भी सम्मानित किया गया है। सरसों अनुसंधान व विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	10.02.2024	--	--

हरियाणा के नूह में खुलेगा कृषि विज्ञान केंद्रः संजीव कौशल

मुख्य सचिव बोले, एचएयू ने विकसित की गेहूं व सरसों की नई किस्में

सवेरा ब्यूरो

चंडीगढ़, 9 फरवरी : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के तिलहन वैज्ञानिकों ने हाल ही में सरसों की दो नई किस्में आरएच-1424 और आरएच-1706 विकसित की हैं। इसके अतिरिक्त गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 भी विकसित की गई है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरकों में अधिक उपज देती है। हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक में भाग ले रहे थे। उन्होंने बताया कि ये किस्में उच्च उपज देने वाली और तेल सामग्री से भरपूर होंगी। ये किस्में देश के सरसों उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादकता बढ़ाने में भी सहायक होंगी। वैज्ञानिकों ने हरियाणा सहित पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुआई के लिए सरसों की एक और उन्नत किस्म आरएच-1975 भी विकसित की है।

हरियाणा के मुख्य सचिव चंडीगढ़ में चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार प्रबंधन बोर्ड की 275वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए।

बाजरा अनुभाग को दूसरी बार इस पुरस्कार के लिए किया गया सम्मानित

विश्वविद्यालय के वीसी बीआर कम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के बाजरा अनुभाग को बाजरा फसल में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए वर्ष 2022-23 के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केंद्र से भी सम्मानित किया गया है। सरसों अनुसंधान और विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ केंद्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय के बाजरा अनुभाग को लगातार दूसरी बार इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कॉलेज ऑफ बायोटेक्नोलॉजी में माइक्रोप्रोपेगेशन और डबल हैप्लोइड उत्पादन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रयोगशाला केंद्र में लगभग 20 लाख उच्च गुणवत्ता वाले, रोग मुक्त और आनुवंशिक रूप से समान पौधों का निर्माण किया जा सकेगा। मधुमक्खी पालन के साथ कृषि और गैर-कृषि परिवारों के लिए आय और रोजगार सृजन के लिए मधुमक्खी पालन उद्योग के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन से सहयोग लिया गया है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय की मधुक्रांति योजना का उद्देश्य वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन और विविधीकरण को अपनाकर स्थायी आर्थिक और पोषण सुरक्षा प्राप्त करना है। बैठक में कृषि विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधीर राजपाल के अलावा बोर्ड के सदस्य भी मौजूद रहे।

गेहूं की नई किस्म की पहचान उत्तर पश्चिमी मैदानी इलाकों के लिए की गई

संजीव कौशल ने बताया कि विश्वविद्यालय ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यूएच-1402 विकसित की है, जो दो सिंचाई और मध्यम उर्वरक में अधिक उपज देती है। इस किस्म की पहचान भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानी इलाकों के लिए की गई है। जिसमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू और कश्मीर शामिल हैं। इस किस्म की औसत उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और अधिकतम उपज मात्र दो सिंचाई में 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है। इस 1402 किस्म को राष्ट्रीय स्तर पर रेतीले, कम उपजाऊ और कम सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय ने पिछले 03 वर्षों में 44 किस्मों का विकास और पहचान की है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक मिलेट्स एवं जैव अपघटन पर बेहतर कार्य करें। अर्बन फार्मिंग और इन्क्यूबेशन सेंटर पर भी अध्ययन करें ताकि किसानों को इनका अधिक लाभ मिल सके। मिलेट्स नागरिकों के लिए बहुत ही फायदेमंद है। इसमें आयरन, प्रोटीन एवं फाइबर अधिक मात्रा में होती है इसलिए मिलेट्स न्यूट्रीशन क्वालिटी डिलिसियस होनी चाहिए। नूह के गांव छपेड़ा गांव में कृषि विश्वविद्यालय का एक नया कृषि विज्ञान केंद्र खोला जाएगा। इस केंद्र के खुलने से इस क्षेत्र के विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञों से मार्गदर्शन मिल सकेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	12.2.24	2	4

15 तक पूरी कर लें सूरजमुखी की बिजाई

हिसार । चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के तिलहन वैज्ञानिकों ने किसानों को 15 फरवरी तक सूरजमुखी की बिजाई पूरी कर लेने की सलाह दी है। सदाबहार तिलहन की फसल सूरजमुखी के अच्छे उत्पादन के लिए तिलहन विशेषज्ञों ने बिजाई से पूर्व बीजोपचार करने और कतारों में पौधे लगाने की सलाह दी है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार बिजाई से पहले बीज को 4-6 घंटे तक पानी में भिगोकर छाया में सुखा लेना चाहिए। जड़गलन तथा तनागलन रोगों से बचाव के लिए प्रति किलोग्राम बीज को 3 ग्राम थाईरम से बिजाई से पहले उपचारित करना श्रेयस्कर होगा। बीजोपचार के लिए बाविस्टीन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के लिए भी प्रयोग की जा सकती है।

इन किस्मों के बीज का करें प्रयोग : समय पर बिजाई के लिए हरियाणा सूरजमुखी नं. 1 व संकर किस्में के बी एस एच-1, एम एस एफ एच-8, पी ए सी-36, के बी एस एच-44, एच एस एफ एच-848 तथा पी सी एस एच-234, पछेती बिजाई के लिए संकर किस्में एम एस एफ एच-17, पी ए सी-1091, सनजीन-85, प्रोसन-09 तथा एच एस एफ एच-848 किस्मों का बीज प्रयोग करें। ब्यूरो